International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 4 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

कुमारसंभवम् : रतिविलाप में नारी वेदना

कृष्णचन्द यादव
शोधछात्र,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा, बिहार,भारत।

कालिदास के 'कुमारसंभवम्' में रतिविलाप का मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है। कालिदास श्रृंगार रस के सबसे बड़े कवि माने जाते हैं। उनकी रचनायें श्रृंगार रस से ओतप्रोत हैं। श्रृंगार के दो पक्ष होते हैं – एक मिलन और दूसरा विरह। मिलन के अन्तर्गत प्रेमीप्रेमिका मिलते हैं, एकदूसरे के प्रति मधुर भाव व्यक्त करते हैं। इनके बीच का मधुर सम्बन्ध तब करुण रूप में बदल जाता है, जब वे एकदूसरे से बिछुड़ जाते हैं। इस विरहावस्था को साहित्य में अत्यन्त मर्मस्पर्शी माना गया है। 'भवभूति' का कहना है कि –

"एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्न पृथक पृथगिवा श्रयते विवर्त्तान्।
आवर्तबुद्बुद्तरङ्गमयाम विकारान् अम्भो यथा सलिलमेव ही तत् समग्रम्।।"[प]

यानी एक ही रस 'करुण रस' है। साहित्यकारों की दृष्टि में विरह प्रेम की जागृत गति है और सुसुप्ति मिलन है। कालिदास के कुमारसंभवम् में कामदेव और रति पतिपत्नी के रूप में मधुर जीवन व्यतित करते हैं। दोनों के बीच हास्य परिहास भी चलता रहता है। देवतागण तारकासुर से परेशान रहते हैं। तारकासुर का वध तभी सम्भव होगा, जब शिवपार्वती से उत्पन्न पुत्र कुमार कार्तिकेय उत्पन्न होंगे। शिव का ध्यान पार्वती की ओर आकर्षित करने के लिए देवतागण कामदेव एवं रति को यह कार्य सौंपते हैं। देवताओं के ओर से इन्द्र कामदेव को अपने पास बुलाते हैं। कामदेव भगवान शिव के हृदय में कामवासना उत्पन्न करने के लिए लग जाते हैं। मन में विकार उत्पन्न होते ही भगवान शिव का मन विचलित हो उठता है। वे आँख खोलते हैं, तो सामने कामदेव को देखते हैं। वे स्थिति समझ जाते हैं और तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म कर देते हैं। कामदेव के भस्म हो जाने पर रति विलाप करने लगती है। कुमारसंभवम् के चतुर्थ सर्ग में इस विलाप का अत्यन्त प्रभावोत्पादक वर्णन कालिदास ने किया है।

कामदेव के भस्म होने के उपरान्त रति बेसुध होकर गिर पड़ती है। रति के वैधव्य होने से उसके अन्दर उठने वाली पीड़ा को अनुभूति कराने के लिए विधाता ने उसे होश में ला दिया। होश में आने के बाद वह अपने पति कामदेव को देखने की चाहत से आँखें खोलती है, लेकिन शिव के नेत्र से निकलती ज्वाला को देख पुनः मूर्छित हो जाती है। कुछ समय बाद फिर रति होश में आती है और विलाप करते हुए कहती है कि हे प्राणनाथ ! जीवित हो क्या ? – ऐसा कहते हुए ज्यों हीं उठकर सामने की ओर देखा, त्यों हीं उसे शंकर की क्रोधाग्नि में जले हुए कामदेव की

पुरुष के आकार में केवल भस्म ही दिखाई पडती है। रति को कामदेव की मृत्यु का निश्चय हो जाने पर वह अत्यंत उद्विग्न हो जाती है, इस क्रम में उनकी बालें बिखर जाती हैं और पृथ्वी पर लोटती हुई विलाप करने लगती है। जिससे उसका सम्पूर्ण शरीर और स्तन धूल से धूसरित हो जाते हैं। उसके विलाप और क्रन्दन से वहाँ की वनस्थली उसी अनुरूप दुःखी हो जाती है। रति विलाप के क्रम में कहती है कि हे प्रिय, अपने अनुपम सौन्दर्य के कारण तुम्हारा जो शरीर विलासी पुरुषों का उपमान बना हुआ था, उसकी आज ऐसी दयनीय दशा देखकर भी मेरी छाती नहीं फटी ! हाय ! इसीलिए लोग कहते हैं कि स्त्रियाँ बड़ी कठोर होती हैं।

रति अपने को कठोर मानती है। अपने को कामदेव पर आश्रित होने की बात कहते हुए कमलिनी और जल के अन्तर सम्बन्ध का प्रसंग रखती है। कालिदास के शब्द अति चमत्कार पूर्ण वर्णन है –

''क्व नु मां स्वदधीनजीवितां विनिकीर्य क्षणभिन्नसौहृदः।
नलिनीं क्षतसेतुबन्धनो जलसङ्घात इवाऽसि विद्रुतः।।''[पप]

कालिदास कामदेव के जीवित न रहने पर रति के अन्दर उत्पन्न वियोग और उसके कारण जीवन में आए रिक्तता का सजीव चित्रण किया है। रति अपने को असहाय महसूस करती है। जिसे कालिदास समझाने के लिए जल और कमलिनी का प्रसंग रखते हुए कहते हैं कि जल अपने बाँध को तोड़ कर बह जाता है, तब कमलिनी बेसहारा हो जाती है। उसी प्रकार, रति के जीवन से कामदेव के जाने पर उसका जीवन प्रेम से रिक्त हो जाता है। वह विलाप करती है।

रति के ऊपर आये संकट उसे अभी तक के जीवन में अपने द्वारा कामदेव के किसी कार्य के प्रतिकूल अपना आचरण नहीं करती है। ध्रूव सत्य है कि स्त्रियाँ पति की मृत्यु के पश्चात् अपने जीवन की छोटीछोटी बातों को याद कर विलाप करती हैं, और पति के पुनः उठ खड़े होने की कामना ईश्वर से करती हैं। इन्हीं बातों को कालिदास ने इस प्रकार कहा है –

''कृतवानसि विप्रियं न में प्रतिकूलं न च ते मया कृतम्।
किमकारणमेव दर्शनं विपन्त्यै रतये न दीयते ।।''[पपप]

रति स्मरण करते हुए विलाप के क्रम में कहती है कि हम दोनों के बीच एक समय हासपरिहास के क्रम में तुमने किसी अन्य स्त्री का नाम ले लिया था। परिणाम स्वरूप मैं रूठ कर प्रणयकोप में चली गयी। अपनी कर्णाभूषण के कमलदल से तुम्हारे मुख पर प्रहार किया था, जिससे उस कमल का पराग तुम्हारी आँखों में पड़ गया। जो तुम्हारे लिए कष्ट का कारण हुआ था। कहीं इन्हीं कारणों को मन में बैठाकर मुझसे दूर हो गये हो। रति इन बातों को कह कर विलाप करने लगती है।

कालिदास ने कामदेव और रति के जीवन में अतिशय निकटता को दिखाते हुए कामदेव द्वारा रति को अपने हृदय में वास करने की बात कभी कहे हुये थे। जिसे रति कामदेव के शिथिल शरीर के आगे छलावा कहते हुए कहती है कि – ''मुझे प्रसन्न करने के लिए तुम कहा करते थे, 'तुम मेरे हृदय में बसती हो।' आज जान पायी हूँ कि वह छल था, मात्र औपचारिक शब्द थे, वरना यह कैसे होता कि तुम तो राख हो गये और मैं सर्वदा अक्षत खड़ी हूँ ?''[पअ]

रति रोतीबिलखती हुई अपने प्रियतम से कहती है, तुमने अभीअभी परलोक गमन किये हो। मैं भी तुम्हारे ही रास्ते से उसी जगह आ रही हूँ। ईश्वर ने मुझे धोखा देते हुए मूर्च्छित कर दिया, वरना मैं भी तुम्हारे साथ होती। क्योंकि यहाँ मेरा कोई नहीं रहा, संसार के सभी प्राणियों के सुख तुमसे सधते हैं।

कालिदास संसार में विचरण करने वाले सभी कामिनियों के उनके प्रियतम तक पहुँचाने में कामदेव की भूमिका को अहम् बताते हैं। अतिवृष्टि के कारण घनी अन्धेरी रात में बादलों की गड़गड़ाहट ने नगर मार्गो को अवरुद्ध कर देते हैं। इन विकट परिस्थितियों में कामदेव उनका मार्ग प्रशस्त्र करते हैं, और उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। रति इन्हीं बातों को कहते हुए कामदेव के भस्म स्वरूप शरीर के समक्ष विलाप करती है।

रति कामदेव को याद दिलाते हुए कहती है कि मदिरा पान से कामिनियों की लाल आँखें और उनकी लड़खड़ाती आवाजों को सहारा देने वाला कोई नहीं है। अब उनके लिए मदिरा पान छलावा बनकर रह जाएगा।

कामदेव के प्रिय मित्र चन्द्रमा को रति सामने लाते हुए कहती है, तुम्हारे शरीर छोड़कर जाने कि बात सुनकर चन्द्रमा अपना उदित होना व्यर्थ मानेगा। वह कृष्णपक्ष के बीतने के बाद बड़ी कठिनाई से अपनी क्षीणता को छोड़ पाएगा।

रति अपने आर्तस्वर में कोयल की कूक और उनके स्वर से मौसम में आए परिवर्तन को आभास देता है। तुम पुष्पित पुष्प और प्रकृति में नवीन आम्र कुसुमों को अपने वाणों पर संधारित करते थे। वे तुम्हारे परलोक जाने से अपने को अस्तित्व विहिन समझ रहे हैं। वे किसके वाणों की शोभा बढ़ाऐंगे ? कालेकाले भौंरे जो कभी तुम्हारे वाणों पर स्थान पाकर अपने भाग्य पर इतराते थे। वे सभी मेरे वियोग की साथिनी बन गयी हैं। मेरा दर्द उनका दर्द हो गया है। वे मेरे साथ विलाप कर रहीं हैं। रति इन प्रसंगों को छेड़ते हुए अपने प्रियतम कामदेव को भस्मधारी शरीर छोड़ पुनः मनोहारी रूप धारण करने को कहती है–

''प्रतिपद्य मनोहरं वपुः पुनरप्यादिश तावदुत्थितः।
रतिदूतिपदेषु कोकिलां मधुरालापनिसर्गपण्डिताम्।।''[अ]

रति पति कामदेव के साथ भोगे हुए दिनों को याद करती है। पति द्वारा अपने पैरों पर सर रख प्रेम की याचना को स्मरण करती और उनके द्वारा एकांत में किया गया रमण रति को उद्विग्न करती है। उसके मन में शांति लेशमात्र भी नहीं है। रति कामदेव को रति कला में पारंगत मानती है। कामदेव द्वारा सुसज्जित अपने सौन्दर्य प्रसाधनों को ज्योंकात्यों धारण की हुई है, और भस्म के समीप विलाप करते हुए कहती है कि मेरे इस रूप को देखने के लिए तुम्हारा सुन्दर शरीर नहीं दिख रहा है। सौन्दर्य से पूर्ण होते समय कामदेव ने रति के दाहिने चरण में महावर लगा पाए थे, तभी देवताओं के स्मरण पर तुम मुझे उसी रूप में छोड़कर चले आये। अतः अब आकर मेरे बायें पैर में भी महावर लगाकर उसे पूर्ण कर दो।

रति कामदेव के परलोक वासी होने पर देवलोक की अप्सरायें उन्हें लुभाएँ वह पतंगे की तरह परलोक आने की चाहत रखती है। कालिदास इस प्रसंग को कुछ यूँ लिखते हैं– ''हे प्रिय ! स्वर्ग की चतुर अप्सराएँ तुम्हें लुभा सकें, उससे पूर्व ही मैं पतंगें की भाँति जलकर फिर से तुम्हारी गोद में आ बैठूँगी।''[अप]

विलाप के दौरान रति कहती है – हे प्रिय ! मैं तुम्हारे पीछेपीछे आ रही हूँ, लेकिन लोक में एक अपवाद अमर हो गया कि रति कुछ क्षणों तक ही सही काम के बिना जीवित रही। तुम्हारे परलोक चले जाने वाले शरीर जो भस्म रूप में है, इसका अंतिम संस्कार के पहले मैं कैसे श्रृंगारित करूँ समझ में नहीं पा रही हूँ। क्योंकि तुम्हारा शरीर और प्राण दोनों ही एक साथ ही ऐसी विचित्र स्थिति में पहुँच गये है।

रति उस क्षण को नहीं भूल पाती है, जब कामदेव द्वारा अपने धनुष को गोद में रखकर सीधा करते और वसंत से बात करते समय तिरछी नजरों से मुझे देखते थे। वह अनुपम दृश्य अविस्मरणीय है। इसे मैं नहीं भूल पा रही हूँ। इस विपदा में तुम्हारा प्रियमित्र वसंत भी नहीं दिखाई दे रहा है। कहीं शिव ने इसे भी तो भस्म नहीं कर दिया ! पति विहीना रति के अति रुदन से निकलते शब्दों ने वसंत के हृदय में विषवाण के समान चुभ गया। जिससे आहत हो रति को सान्त्वना देने के लिए प्रकट हुए। वसंत को अपने सामने देखते ही रति छाती पीटपीटकर जोर से रुदन करने लगी ।

भूलोक में मृत्यु के बाद उसकी आत्मा की शांति के लिए मृत व्यक्ति के परिजन जलांजलि, प्रेततर्पण और श्राद्धकर्म करते हैं। रति अपने चिता पर जाने से पहले वसंत से आग्रह करती है कि हम दोनों के न रहने पर मानवीय क्रियाकर्म विधि पूर्वक सम्पन्न अपने हाथों कर देंगें। वसन्त को रति ने कामदेव के और्ध्वदेहिक क्रिया करते समय श्राद्ध में चंचल किसलय युक्त आम्रमंजरी देने को कहती है, क्योंकि सुहृदय मदन का अति प्रिय था।

रति अपने विलाप और रुदन के बाद कामदेव के भस्म के साथ प्राण त्यागने वाली होती है तभी आकाशवाणी ने रति के उद्वेलित मन में शांति पैदा कर देती है। रति को सम्बोधित करते हुए आवाज आती है, हे कामदेव की प्रिये ! तुम्हारा पति तुमसे ज्यादा दिनों के लिए दूर नहीं हुआ है। वह शीघ्र ही शरीर प्राप्त करेगा। जिन कारणों से शिव जी के नेत्रों की ज्वाला से भस्म हुए हैं, वह अकारण नहीं है। एक समय कामदेव प्रजापति ब्रह्मा की इंद्रियों को इतना विचलित कर कर दिये थे कि उनके मन में अपनी पुत्री सरस्वती के प्रति कामभावना उत्पन्न हो गया था। जिसके कारण वह ब्रह्मा द्वारा शापित हुए। परिणामतः उनकी यह दशा हुई।

सृष्टि रक्षार्थ धर्मदेव के विनति पर ब्रह्मा ने कामदेव के शाप की अवधि भी निश्चित कर दिये। पार्वती जी की तपस्या से प्रसन्न हो शिव जी ने पार्वती से शादी कर ली, विवाहोपरान्त आनन्दित होकर वह काम को उसके शरीर का दान कर देंगे। इसलिए हे सुन्दरी तुम अपने शरीर त्याग की इच्छा को मन से निकाल दो। तुम इसी शरीर से भविष्य में होने वाले अपने प्रियतम का समागम करोगी।

इन प्रकरणों को सुन रति के मन में शांति का संचार हुआ। कालिदास लिखते हैं कि अदृश्य शक्ति ने रति के शरीर त्याग के विचार को शिथिल कर दिया। साथ ही वसन्त ने भी अपनी अर्थपूर्ण वाणी से रति को आश्वासन दिया। पति वियोग से पीड़ित रति ने अपने दुर्बल शरीर के सहारे शाप की अवधि समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगी। ठीक उसी प्रकार जैसे किरणों के अभाव में धुंधली और तेजहीन चन्द्रमा की कला रात के आने की प्रतीक्षा करती है।

समग्रतः रति विलाप के माध्यम से कालिदास ने प्रेम के अनछुयें पहलूओं पर भी प्रकाश डाला है। जो साहचर्य प्रेम के क्रम में एकदूसरे द्वारा प्रयुक्त सामग्री भी रुदन का कारण बन जाता है। प्रणय को उद्दीप्त करने वाले सभी

कारक प्रेम को ही जाग्रत नहीं करता वरण करुण रस में भी सहायक होता है। रति के विलाप में कामदेव द्वारा रति को साथ भोगे हुए दिन के एकएक पल और एकएक वस्तु का जिक्र है। जो रति विलाप सर्ग को उत्कृष्टिता प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

[i] संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ संख्या – 175

[ii] चतुर्थ सर्ग कुमारसम्भवम् – 4/6

[iii] कुमारसंभवम् चतुर्थ सर्ग – 4/7

[iv] अनुवादक मिथिलेश चतुर्वेदी , काव्य नाटकसंग्रह, साहित्य अकादमी कालिदास कृत कुमारसंभवम् , पृ० सं० – 51

[v] कुमारसंभवम् चतुर्थ सर्ग – 4/16

[vi] अनुवादक मिथिलेश चतुर्वेदी , काव्य नाटकसंग्रह, साहित्य अकादमी कालिदास कृत कुमारसंभवम् , पृ० सं० – 52